13

उत्तररामचरित - अष्टावक्र संवादः

इस पाठ में प्रस्तावना के बाद नाटक आरम्भ होता है। यहाँ सर्वप्रथम सीता को सान्त्वना देने के लिए राम प्रवेश करते हैं। उसी समय महर्षि अष्टावक्र ऋष्यश्रृंग के आश्रम से आते हैं। वह आकर सीता और राम को गुरुजन वशिष्ठादि द्वारा प्रदान उपदेशों को सुनाते हैं। राम आदेशानुसार ही जीवन व्यतीत करेंगे, यह प्रतिज्ञा करते हैं। उसके बाद लक्ष्मण आकर चित्रकार द्वारा अंकित चित्र को देखने के लिए राम को कहते हैं। प्रसंग से राम सीता की पवित्रता का वर्णन करते है। ये सभी अंश हमें पाठ को पढ़ने से ज्ञात होंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे :

- राम के गुणों को जान पाने में;
- देवी सीता के चरित्र को समझ पाने में;
- छन्दों के लक्षणों को जान पाने में;
- श्लोकों के अन्वय एवं प्रतिपदार्थ आदि को समझ पाने में और;
- दीर्घ पदों का विग्रह एवं समास को जान पाने में।

13.1 सम्पूर्ण मूलपाठ

(ततः प्रविशत्युपविष्टो रामः सीता च)

टिप्पणी

रामः- देवि! वैदेहि! विश्वसिहि ते हि गुरवो न शक्नुवन्ति विहातुमस्मान्।
किंत्वनुष्ठाननित्यत्वं स्वातन्त्र्यमपकर्षति।
सङ्कटा ह्याहिताग्नीनां प्रत्यवायैर्गृहस्थता।।8।।

सीताः- जाणामि अज्जउत्त! जाणामि। किंदु संदावआरिणो बन्धुजणविप्प-ओआ होन्ति।
(जानामि आर्यपुत्र! जानामि किन्तु संतापकारिणो बन्धुजनविप्रयोगा भवन्ति)।

रामः- एवमेतत्। एते हि दयमर्मच्छिद संसारभावा। येभ्यो बीभत्समानाः संत्यज्य सर्वान्कामानरण्ये विश्राम्यन्ति मनीषिणः।

(प्रविश्य)

कंचुकीः- रामभद्र! (इत्यर्धोक्ते साशङ्कम्) महाराज!-

रामः- (सस्मितम्) आर्य! ननु रामभद्र! इत्येव मां प्रत्युपचारः शोभते तातपरिजनस्य। तद्यथाभ्यस्तमभिधीयताम्।

कंचुकी- देव! ऋश्यशृंगाश्रमदष्टावक्रः सम्प्राप्तः।

सीता- अज्ज! तदो किं विलम्बीअदि (आर्य! ततः किं विलम्ब्यते)।

रामः- त्वरितं प्रवेशय।

(कंचुकी निष्क्रान्तः।)
(प्रविश्य)

अष्टावक्रः- स्वस्ति वाम्।

रामः- भगवन्! अभिवादये इत आस्यताम्।

सीता- भअव णमो दे। अवि कुसलं सजामातुअस्स गुरुअणस्स अज्जा, सन्ता, अ।
(भगवन्नमस्ते। अपि कुशलं सजामातृकस्य गुरुजनस्यार्यायाः शान्तायाश्च?)

रामः- निर्विघ्नः सोमपीथी आवुत्तो मे भगवानृष्यशृंगः, आर्या च शान्ताः?

सीता- अम्हे वि सुमरेदि (अस्मानपि स्मरति?)

अष्टावक्रः- (उपविश्य) अथ किम्। देवि! कुलगुरुर्भगवान् वसिष्ठस्त्वामिदमाह-
विश्वम्भरा भगवती भवतीमसूत राजा प्रजापतिसमो जनकः पिता ते।
तेषां वधूस्त्वमसि नन्दिनि! पार्थिवानां येषां कुलेषु सविता च गुरुर्वयं च ।।9।।
तत्किमन्यदाशास्महे। केवलं वीरप्रसवा भूयाः।

रामः- अनुगृहीता स्मः।
लौकिकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते।
ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुवर्तति।।10।।

टिप्पणी

अष्टावक्रः - इदं च भगवत्याऽरुन्धत्या देवीभिः शान्तया च भूयो भूयः संदिष्टम्- 'यः कश्चिद्गर्भदोहदो भवत्यस्याः सोऽवश्यमचिरात्सम्पादयितव्य' इति।

राम- क्रियते यद्येषा कथयति।

अष्टावक्रः - ननान्दुः पत्या च देव्या संदिष्टम्- 'वत्से, कठोरगर्भेति नानीतासि। वत्सोऽपि रामभद्रस्त्वद्विनोदार्थमेव स्थापित। तत्पुत्रपूर्णोत्सङ्गामायुष्मतीं द्रक्ष्यामः इति।

रामः - (सहर्षलज्जास्मितम्) तथास्तु। भगवता वसिष्ठेन न किञ्चिदादिष्टोस्मि।

अष्टावक्र- श्रूयताम्।

जामातृयज्ञेन वयं निरुद्धास्त्वं बाल एवासि नवं च राज्यम्।
युक्तः प्रजानामनुरंजने स्यास्तस्माद्यशो यत्परमं धनं वः॥11॥

रामः- यथा समादिशति भगवान्मैत्रावरुणिः।

स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकस्य मुंचतो नास्ति मे व्यथा ॥12॥

सीता- अदो जेव्व राहवधुरन्धरो अज्जउत्तो। (अत एव राघवधुरन्धर आर्यपुत्रः।)

रामः- कः कोऽत्र भोः। विश्राम्यतामष्टावक्र।

अष्टावक्रः- (उत्थाय परिक्रम्य च) अये कुमारलक्ष्मणः प्राप्तः।

(इति निष्क्रान्तः)

(प्रविश्य)

लक्ष्मणः - जयति जयत्यार्यः। आर्य! अर्जुनेन चित्रकरेणास्मदुपदिष्टमार्यस्य चरितमस्यां वीथ्यामभिलिखतम्। तत्पश्यत्वार्य।

रामः- जानासि वत्स! दुर्मनायमानां देवीं विनोदयितुम्। तत्कियन्तमवधिं यावत्।

लक्ष्मणः- यावदार्याया हुताशनशुद्धिः।

रामः- शान्तं पापम् (ससान्त्ववचनम्।)
उत्पत्तिपरिपूतायाः किमस्याः पावनान्तरैः।
तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः॥13॥
देवि देवयजनसम्भवे! प्रसीद। एष ते जीविताविधः प्रवादः।
क्लिष्टो जनः किल जनैरनुरंजनीय स्तन्नो यदुक्तमशुभं च
न तत्क्षमं ते।
नैसर्गिकी सुरभिणः कुसुमस्य सिद्धा मूर्ध्नि स्थितिर्न
चरणैरवताडनानि॥14॥

टिप्पणी

13.2 मूलपाठ

(ततः प्रविशत्युपविष्टो रामः सीता च)

रामः- **देवि! वैदेहि! विश्वसिहि ते हि गुरवो न शक्नुवन्ति विहातुमस्मान्।**
कित्वंनुष्ठाननित्यत्वं स्वातन्त्र्यमपकर्षति।
सङ्कटा ह्याहिताग्रीनां प्रत्यवायैर्गृहस्थता॥8॥

सीताः- **जाणामि अज्जउत्त! जाणामि। किंदु संदावआरिणो बन्धुजणविप्प-ओआ होन्ति।**
(जानामि आर्यपुत्र! जानामि किन्तु संतापकारिणो बन्धुजनविप्रयोगा भवन्ति)।

रामः- **एवमेतत्। एते हि दयमर्मच्छिद संसारभावा। येभ्यो बीभत्समानाः संत्यज्य सर्वान्कामानरण्ये विश्राम्यन्ति मनीषिणः।**

अन्वयः-

(ततः प्रविशति उपविष्टः रामः सीता च)

रामः- दैवि वैदेहि, समाश्वसिहि, हि ते गुरवः अस्मान् विहातुं न शक्नुवन्ति। किन्तु अनुष्ठाननित्यत्वं स्वातन्त्र्यम् अपकर्षति। हि आहिताग्रीनां गृहस्थता प्रत्यवायैः सङ्कटा।

सीता- आर्यपुत्र, जानामि, बन्धुजनविप्रयोगाः सन्तापकारिणः भवन्ति।

रामः- एवम् एतत्। संसारभावाः हृदयमर्मच्छिदः येभ्यः बीभत्समानाः मनीषिणः सर्वान् कामान सन्त्यज्य अरण्ये विश्राम्यन्ति।

अन्वयार्थः- (ततः -उसके बाद, प्रविशति-मंच पर प्रकट होते हैं, उपविष्टः-बैठे हुए, राम सीता च,- राम और सीता)

रामः- हे देवि- अरे वैदेहि विदेहराजपुत्री सीता, समाश्वसिहि- विश्वस्त हों अथवा समाश्वस्त हो, हि- क्योंकि, ते- तुम्हारे, गुरवः- जनक महोदय, अस्मान्- हमारे, विहातुम्- छोड़ने के लिए, न-नहीं, शक्नुवन्ति- समर्थ हो हैं। किन्तु- परन्तु, अनुष्ठाननित्यत्वम्- नित्य नैमित्तिक आदि कर्मकलाप आदि की नित्यता के कारण, स्वातन्त्रयं- स्वच्छन्दता को, अपकर्षति- न सहन करते हैं। हि- क्योंकि, आहिताग्नीनाम्- जिनके द्वारा अग्नि स्थापित की जाती है उन अग्निहोत्रीयों का, गृहस्थता- ग्रहस्थियों के, प्रत्यवार्यैः- शास्त्र कहे गये आचार से उत्पन्न न होने के कारण, पातक के द्वारा, संकट- दुःख का कारण होता है।

सीता- आर्यपुत्र- स्वामी, जनामि- जानती हूँ, किन्तु- परन्तु, बन्धुजन विप्रयोगः- बन्धुजनों का बिछुड़ना, सन्तापकारिणः- सन्ताप का कारण, भवन्ति- होता है।

रामः- एवम् एतत् -आपके द्वारा कहा गया वह सत्य ही हैं, संसार भावाः- जीवन में लोक के धर्म, हृदयमर्माच्छिदः- हृदय के मर्म को छेदने वाले, येभ्यः- जिससे,

टिप्पणी

वीभत्समानाः- जुगुप्सा या घृणिततावाले, मनीषिणः- मनीषी ,तत्ववेताजन, सर्वान्- सभी, कामान्- कामों को, सन्त्यज्य- परित्याग करके, अरण्ये- वन में, विश्राम्यन्ति- शान्ति को प्राप्त करते हैं।

व्याख्याः- यहाँ श्री राम पितृगमन के कारण हुए वियोग से खिन्न पत्नी सीता को आश्वस्त करते हैं। जनक महोदय हमारे पूज्य गुरूजन है। अतः वे अधिक काल को व्यतीत करके हमको छोड़कर स्थापित रहने में असमर्थ हैं। अतः वे पुनः आयेंगे यह भाव है। इस प्रकार से जानकी सीता को राम सान्त्वना देते हैं।

नित्य, नैमित्तिक और काम्य ये तीन प्रकार के कर्म होते हैं। उनमें से नित्य कर्मों के अनुष्ठान से फल नहीं होता, किन्तु उनके न करने पर पाप की संभावना होती है। नैमित्तिक कर्मों के अनुष्ठान में फल होता है किन्तु अकारण करने पर विपरीत होता है। काम्य कर्मों के अनुष्ठान में फल कुछ भी नहीं है। अविधान होने पर दोष भी नहीं हैं। धार्मिक सन्त पुरुष इन कर्मों को नित्य करते हैं। अर्थात् वे वैवाहिक जीवन में नित्य अग्नि होत्र की उपासना करते हैं। वह ही उनका नित्य कर्म है। इस प्रकार विदेहराज जनक अग्निहोत्र करते थे। अतः अयोध्या में वे बहुत दिनों तक रहने में असमर्थ थे। इस कारण ही गये, न कि सीता के प्रति कम स्नेह होने के कारण। इस प्रकार राम ने सीता को सान्त्वना के वचन कहे।

राम के आश्वासन प्रदान के बाद सीता ने राम को उद्देश्य करके कहा कि वह सब कुछ समझती है, किन्तु स्वजनों का वियोग सदैव सन्तापदायी होता है। इस प्रकार सीता के वचनों को सुनकर सत्यता को स्वीकार करके राम ने कहा- यह संसार का धर्म हृदय का मर्म भेदक है। इससे विरक्त, आत्मज्ञ जन सभी विषयों का परित्याग करके वन में शान्ति को प्राप्त करते है। कामना ही दुखों का मूल है।

व्याकरण विमर्शः-

- **विहातुम्**:-विपूर्वकात् हाधातोः तुमुन्प्रत्यये विहतुम् इति रूपम्।
- **अनुष्ठानम्**-अनुपूर्वकात् स्थाधातोः ल्युटि तस्य अनादेशे अनुष्ठानम् इति रूपम्। अनुष्ठानस्य नित्यत्वम् अनुष्ठाननित्यत्वम् इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः।
- **प्रत्यवायः**-प्रति अव इत्युपसर्गद्वयपूर्वकात् इण्धातोः घञ्प्रत्यये इति रूपम्।
- **आहिताग्नीनाम्**-आहितः अग्निः यैः ते आहिताग्नयः, तेषाम् आहिताग्नीनाम् इति बहुव्रीहिसमासः। साग्निकानाम् इत्यर्थः।
- **बीभत्समानाः**-बध्धातोः सनप्रत्यये निष्पन्नाद् बीभत्सधातोः शनचि पुंसि प्रथमाबहुवचने बीभत्समानाः इति रूपम्।
- **बन्धुजनविप्रयोगः**-विपूर्वकात् प्रपूर्वकात् युज्धातोः घञा विप्रयोगशब्दो निष्पन्नः। बन्धुजनानां विप्रयोगः बन्धुजनविप्रयोगः इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः।

सन्धिविच्छेदः-

- **किन्त्वनुष्ठाननित्यत्वम्**-किन्तु+अनुष्ठाननित्यत्वम्।
- **ह्याहिताग्नीनाम्**- हि+आहिताग्नीनाम्।
- **प्रत्यवायैर्गृहस्थता**-प्रत्यवायैः+गृहस्थता।

छन्दः-इस श्लोक में अनुष्टुप्-छन्द है

अलंकार विमर्श

(1) इस श्लोक में पूर्वार्ध के प्रति उत्तरार्ध का हेतु होने के कारण काव्यलिंग अलंकार है।

(2) उत्तरार्ध से पूर्वार्ध का समर्थन होने के कारण अर्थान्तरन्यास अलंकार है उसका लक्षण साहित्यदर्पण में:- **सामान्य वा विशेषस्तेन वा यदि।**

कार्यंच कारणेनेदं कार्येण च समर्ध्यते।।
साधर्म्येणेतरेणार्थान्तरन्याससोऽष्टधा ततः।।

(3) यहाँ अर्थान्तरन्यास का और काव्यलिंग का अंगांगिभाव होने से संकरालंकार है।

पाठगतप्रश्न 13.1

(1) गृहस्थों की स्वतन्त्रता को कौन नियंत्रित करता है?

(2) ''किन्त्वनुष्ठाननित्यत्वम्'' सन्धिविच्छेद कीजिए?

(3) कर्म कितने प्रकार के है और कौन से हैं?

(4) आहिताग्नियों की गृहस्थता कैसे होती है?

(5) कौन सन्तापकारी होते है?

(6) संसारभावा कैसे होते हैं?

(7) कैसे मनीषी वन में शान्ति को प्राप्त करते है?

13.3 मूलपाठ

(प्रविश्य)

कंचुकीः- रामभद्र! (इत्यर्धोक्ते साशङ्कम्) महाराज!-

रामः- (सस्मितम्) आर्य! ननु रामभद्र! इत्येव मां प्रत्युपचारः: शोभते तातपरिजनस्य। तद्यथाभ्यस्तमभिधीयताम्।

टिप्पणी

कंचुकी– देव! ऋष्यशृंगाश्रमदष्टावक्रः सम्प्राप्तः।

सीता– अज्ज! तदो किं विलम्बीअदि (आर्य! ततः किं विलम्ब्यते)।

रामः– त्वरितं प्रवेशय।

(कंचुकी निष्क्रान्तः।)

अन्वयः– **(प्रविश्य)**

कुंचुकी– रामभद्र! (इत्यर्धोक्ते साशङ्कम्) महाराज!

रामः– (सस्मितम्) आर्य! ननु रामभद्र! इत्येव तातपरिजनस्य मां प्रति उपचार:शोभते। तद् यथा अभ्यस्तम् अभिधीयताम्।

कंचुकी– देव! ऋश्यशृंगाश्रमाद् अष्टावक्रः सम्प्राप्तः।

सीता– आर्य! ततः किं विलम्ब्यते।

रामः– त्वरितं प्रवेशय।

(कंचुकी निष्क्रान्तः)

अन्वयार्थः– **(प्रविश्य– प्रवेश करके)**

कंचुकी– रामभद्र– शोभन राम (इत्यर्धोक्ते साशंकम्–, भय के साथ)।महाराज!

रामः– (सस्मितम्– थोड़ी हंसी के साथ) आर्य– पिता के परिजन का या पितृचरण सेवक का, रामभदद्र! इत्यवे, मां– रामचन्द्र को (मुझको), प्रति उपचारः– व्यवहार, शोभते– उपयुक्त है। **तत्**– उस कारण से, यथाभ्यस्तम्– अभ्यास के अनुरूप से, अभिधीयताम्– उच्चारण करो।

कंचुकी– देव–हे प्रभु, ऋष्यशृंगाश्रमात्– मुनि ऋष्यशृंग के आश्रय से, अष्टावक्रः– अष्टावक्र नामक, महात्मा, सम्प्राप्तः– आया है।

सीता– आर्य, ततः– उससे, किम्– किस लिए, विलम्बयते– विलम्ब किया जा रहा है।

रामः– त्वरितम्– अतिशीघ्र, प्रवेशम्– प्रशेव कराओ।

(कंचुकी निष्क्रान्त– कंचुकी चला गया)

व्याख्याः– उसके बाद कंचुकी प्रवेश करके रामचन्द्र को पूर्वतन अभ्यास के अनुसार रामभद्र ऐसा ही पुकारा। किन्तु इस समय वह अयोध्या का अधिपति राजा हो गया। अतः शंका करता हुआ, वह अगले ही क्षण में राम को महाराज ऐसा पुकारा। इस सब को समझकर श्रीराम थोड़ा हंसकर–मुस्कराकर कंचुकी को उद्देश्य करके बोले कि रामभद्र ऐसा ही व्यवहार तुम्हारे लिए रूचिकर है। (अच्छा लगता है।) क्योंकि ये परिचारक पितृचरण सेवक हैं। यहाँ राम की उदारता प्रशंसनीय है। महाराज होते हुए भी सेवकों को भयरहित होने का सम्पादन करते हैं। उससे उसकी क्षमा कैसी थी इसका पता चलता है। इस प्रकार उसका धीरोदात्त नायकत्व उत्पन्न होता

टिप्पणी

है। उस कारण से पूर्वाभ्यास के अनुसार वक्तव्य है। कंचुकी ने सूचित किया कि ऋष्यशृंग मुनि के आश्रम से महर्षि अष्टावक्र आये हैं। तब राम और सीता महर्षि को शीघ्र ही अन्दर लाने के लिए आज्ञा दी। उसके बाद कंचुकी बाहर जाता है।

विशेष टिप्पणीः- कंचुकी अर्थात परिच्छेद इसकी है वह कंचुकी होता है- नाटयशास्त्र में कंचुकी का लक्षण-**अन्तः पुरचरो वृद्धो विप्रो रूपगुणान्वितः।**

सर्वकार्यार्थकुशलः कञ्चुकीत्यभिधीयते।

साहित्य दर्पण में-**ईषद्विकासिनयनं स्मितं स्यात्स्पन्दिताधरम्** ।। इति।

व्याकरण विमर्शः-

तातपरिजनस्य - तातस्य परिजनः तातपरिजनः, तस्य तातपरिजनस्य इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः।

ऋष्य शृंगाश्रमात् - ऋष्यशृंगाश्रमः, तस्माद् ऋष्यशृंगाश्रमाद् इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः।

पाठगत प्रश्न 13.2

(8) रामभद्र यह व्यवहार किसको शोभा देता है?

(9) ऋष्यशृंगाश्रम से कौन आया?

(10) कौन राम को रामभद्र सम्बोधन करता है?

13.4 मूलपाठ

(प्रविश्य)

अष्टावक्रः- स्वस्ति वाम्।

रामः- भगवन्! अभिवादये इत आस्यताम्।

सीता- भअव णमो दे। अवि कुसलं सजामातुअस्स गुरुअणस्स अज्जा, सन्ता, अ। (भगवन्नमस्ते। अपि कुशलं सजामातृकस्य गुरुजनस्यार्यायाः शान्तायाश्च?)

रामः- निर्विघ्नः सोमपीथी आवुत्तो मे भगवानृष्यश्रृङ्गः, आर्या च शान्ताः?

सीता- अम्हे वि सुमरेदि (अस्मानपि स्मरति?)

अष्टावक्रः- (उपविश्य) अथ किम्। देवि! कुलुगरुर्भगवान् वसिष्ठस्त्वामिदमाह-

विश्वम्भरा भगवती भवतीमसूत राजा प्रजापतिसमो जनकः पिता ते।
तेषां वधूस्त्वमसि नन्दिनि! पार्थिवानां येषां कुलेषु सविता च गुरुर्वयं च ।।9।।
तत्किमन्यदाशास्महे। केवलं वीरप्रसवा भूयाः।

टिप्पणी

अन्वयः- (प्रविश्य)

अष्टावक्रः- वां स्वस्ति।

रामः- भगवन्! अभिवादये इत आस्यताम्।

सीता- भगवन् ते नमः। अपि सजामातृकस्य गुरुजनस्य आर्यायाः शान्तायाः च कुशलम्?

रामः- मे आवुत्तः सोमपीथी भगवान् ऋष्यश्रृङ्गः निर्विघ्नः, आर्या च शान्ताः?

सीता- अस्मान् अपि स्मरति?

अष्टावक्रः- (उपविश्य) अथ किम्। देवी! कुलगुरुः भगवान् वसिष्ठः त्वाम् इदम् आहभगवती विश्वम्भरा भवतीम् असूत। प्रजापतिसमो राजा जनकः ते पिता। नन्दिनि तेषां पार्थिवानां त्वं वधूः असि, येषां कुलेषु सविता गुरुः वयं च (गुरवः)। तत् अन्यत् किम् आशास्महे। केवलं वीरप्रसवाः भूयाः।

अन्वयार्थः- (प्रविश्य- प्रवेश करके)

अष्टावक्रः- वां- तुम दोनों का, स्वस्ति- कल्याण हो।

रामः- भगवन्- देव!, अभिवादये- प्रणाम करता हूँ। इतः- यहाँ, आस्यताम्- बैठो

सीता- भगवन्-षट् ऐश्वर्यशाली, ते- तुम्हे, नमः- नमस्कार। सजामातृकस्य- जामाता के साथ, गुरुजनस्य- कौशल्या कैकेयी, सुमित्रा आदि, आर्यायाः शान्तायाः- दशरथ कन्या शान्ता, अपि कुशलम्- सभी कुशलपूर्वक हैं।

रामः- मे- मेरे, सोमपीथी- सोमपान करने वाले, आवुत्तः- बहिन के पति, भगवन् ऋष्य श्रृंग आर्याशान्ता च- ऋषि ऋष्यश्रृंग और शान्ता, निर्विघ्नः- विघ्नरहित है।

सीता- किं सा शान्ता- क्या वह शान्ता, अस्मान् अपि स्मरति- हम को भी स्मरण करती है।

अष्टावक्रः- (उपविश्य- बैठकर) (स्मरन्ति सर्वे भवन्तीम्- आप सब को स्मरण करते हैं, कुशलिनः सर्वे- सभी कुशलपूर्वक हैं) अथ- अब, किम्- क्या!, देवि- हे राजरानी, कुलगुरु भगवान् वसिष्ठः-कुल के गुरू भगवान् ऋषि वशिष्ठ, त्वाम्- तुम सीता को, इदम्- यह, **आह**ः- कहा है, भगवती- षाड् गुण्य परिपूर्णा, विश्वम्भरा- पृथिवी ने, भवतीम्- सीता को, असूत-पैदा किया। प्रजापति समः- ब्रह्मा के समान, राजा जनकः-नृपविदेहपति, ते- तुम्हार, पिता- जनक हैं। नन्दिनि- हे सौभाग्यवती, तेषां पार्थिवानाम्- उन प्रसिद्ध राजाओं की, त्वम्- सीता, वधूः- कुलस्त्री, असि- हो, येषां राज्ञाम्- जिन राजाओं के, कुलेषु- वंश में, सविता- सूर्य, गुरु पिता वंश प्रवर्तक, वयं च- और हम (गुरुजन) हितोपदेश देने वाले थे। तत्- उससे, अन्यत्- दूसरा, किम्- क्या, आशास्महे- आशा करे, केवलं वीर प्रसवा- वीर पुत्र वाली, भूयाः- होओ।

व्याख्याः- उसके बाद भगवान अष्टावक्र प्रवेश करके उन दोनों राम और सीता को

टिप्पणी

'कल्याण हो' यह आशीर्वाद दिया। राम ने उसका अभिवादन करके आसन ग्रहण करने के लिए उनसे अनुरोध किया और सीता ने उनको नमस्कार करके जामाता ऋष्यश्रृंग तथा आर्या शान्ता की कुशल वार्ता पूछी। राम ने भी बहन के पति ऋष्यश्रृंग से बहन शान्ता की वार्ता को पूछा। उसके बाद सीता ने जिज्ञासा की, कि वे दोनों भी क्या राम और सीता को स्मरण करते हैं। उनके वचनों को सुनकर और आसन पर बैठकर महर्षि अष्टावक्र ने सीता से कहा कि वे कुशलपूर्वक हैं। उसके बाद उसने कुलगुरू वशिष्ठ ने सीता के प्रति जो कहा वह सब बताया।

भगवती पृथ्वी ने सीता को उत्पन्न किया। ब्रह्मा के समान व प्रजापति के तुल्य, राजा जनक सीता के पिता है और भी सीता जिस रघुवंश की कुलवधू है उस वंश के गुरू भगवान सूर्य और स्वयं ऋषि वशिष्ठ है। इस श्लोक में रघुवंश के प्रताप और उज्ज्वलता को कवि ने वसिष्ठ के मुख से प्रकाशित किया है। यहाँ सीता के प्रति भगवान वशिष्ठ के वचन में सीता का सदैव ही कल्याण होगा यह सार है। इस प्रकार इन महाचरितों के संयोग से सीता का कभी भी अशुभ नहीं होगा। अर्थात् सदैव मंगल ही होगा यह आशय है। अतः सीता वीर पुत्र की जननी होगी यह महर्षि वसिष्ठ का आशीर्वाद है।

विशेष टिप्पणी:-यहां ऋषिश्रेय विधानरूप वशिष्ठ के अनुग्रह कथावस्तु का बीज के बहुकरण होने से मुखसन्धि के 'परिकर' नामक अंग का वर्णन है उसका लक्षण है -''बीज स्य बहुकरणं परिकरः''।

अष्टावक्र के प्रति भगवन् यह राम का सम्बोधन है। भगवान का लक्षण है-

उत्पत्ति च स्थिति चैव लोका नामगतिं गतिम्।
वेत्ति विद्यामविद्यां च स वाच्यो भगवानिति॥

व्याकरण विमर्शः-

सजामातृकस्य -जामात्रा सहितः सजामातृकः तस्य सजामातृकस्य इति बहुव्रीहिसमासः।

सोमपीथी-पीथं नाम पानम्। सोमस्य पीथं सोमपीथम् इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः। तद् अस्य अस्ति इति अर्थे सोमपीथशब्दात् अत इनिठनौ इति इनिप्रत्यये सोमोपीथी इति रूपम्।

विश्वम्भरा- विश्वोपपदपूर्वकात् भृधातोः खच्प्रत्यये मुमागमे टापि विश्वम्भरा इति रूपम्।

अलंकार विमर्शः-

(1) प्रजापति समः यहाँ उपमा अलंकार है। उसका लक्षण है -
''साम्यं वाच्यमवैधर्म्यं वाक्यैक्य उपमा द्वयोः।''

(2) इस श्लोक में ''येषां कुलेषु सविता गुरुर्वयं च'' से यहाँ शब्दोपादान से समुच्चय अलंकार है उसका लक्षण है-

टिप्पणी

समुच्चयोऽयमेकस्मिन् सति कार्यस्य साधके।
खले कपोतिकान्यायात्तत्करः स्यात्परोऽपि चेत्।।
गुणौ क्रिये च युगपत् स्यातां यद्वा गुणक्रिये।।

(3) 'जनकः पिता 'यहाँ पुनरूक्तवदाभास अलंकार है। उसका लक्षण है-

आपाततो यदर्थस्य पौनरूक्त्येन भासनम्।
पुनरुक्तवदाभासः स भिन्नाकार शब्दगः।।

'**छन्द**-विश्वम्भरा इस श्लोक में वसन्ततिलका छन्द है उसका लक्षण है-

उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः।

पाठगत प्रश्न 13.3

11. सीता की माता कौन थी?
12. सीता के पिता कौन थे?
13. सीता किस वंश की वधू है?
14. सीता के प्रति वशिष्ठ का क्या आशीर्वाद है?

13.5 मूलपाठ

रामः - **अनुगृहीता स्मः।**
लौकिकानां हि साधूनामर्थ वागनुवर्तते।
ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुवर्तते।।10।।

अष्टावक्रः **इदं च भगवत्याऽरुन्धत्या देवीभिः शान्तया च भूयो भूयः संदिष्टम्- 'यः कश्चिद्गर्भदोहदो भवत्यस्याः सोऽवश्यमचिरात्सम्पादयितव्य' इति।**

राम- **क्रियते यद्येषा कथयति।**

अष्टावक्रः- **ननान्दुः पत्या च देव्या संदिष्टम्- 'वत्से, कठोरगर्भेति नानीतासि। वत्सोऽपि रामभद्रस्त्वद्विनोदार्थमेव स्थापित। तत्पुत्रपूर्णोत्सङ्गामायुष्मतीं द्रक्ष्यामः इति।**

रामः- **(सहर्षलज्जास्मितम्) तथास्तु। भगवता वसिष्ठेन न किञ्चिदादिष्टोस्मि।**

अन्वर्य :

रामः- अनुगृहीताः स्मः। लौकिकानां साधूनां वाक् हि अर्थम् अनुवर्तते। पुनः आद्यानाम् ऋषीणां वाचम् अर्थः अनुधावति।।10।।

टिप्पणी

अष्टावक्रः- इदं च भगवत्या अरुन्धत्या देवीभिः शान्तया च भूयो भूयः सन्दिष्टम्- 'यः कश्चिद् अस्याः गर्भदोहदः भवति सः अवश्यम् अचिरात् सम्पादयितव्यः' इति।

रामः- एषा यत् कथयति क्रियते।

अष्टावक्रः- ननान्दुः पत्या ऋष्यश्रृङ्ग्येण च देव्याः सन्दिष्टम्- 'वत्से, कठोरगर्भा इति न आनीता असि। वत्सः अपि रामभद्रः त्वद्विनोदार्थम् एव स्थापितः। तत् पुत्रपूर्णोत्सङ्गाम् आयुष्मतीं द्रक्ष्यामः इति।

रामः- (सहर्षलज्जास्मितम्) तथा अस्तु। भगवता वसिष्ठेन न किञ्चिद् आदिष्टः अस्मि।

अन्वयार्थः-

रामः- अनुगृहीताः स्मः- कृतार्थ होता हूँ। हि- क्योंकि, लौकिकानाम्- सामान्यजनों, साधुनाम्- सज्जनों की, वाक्- वाणी, अर्थ- वस्तु, अनुवर्तते- अनुसरण करती है। पुनः- परन्तु, आद्यानाम् - वेद प्रधान, ऋषिणाम् - वशिष्ठादि ऋषियों की, वाचम्- वाणी, अर्थम्- वस्तु, अनुधावति- अनुसरण करती है।

अष्टावक्रः- इदम् च- और यह, भगवत्या- देवी, अरून्धत्या- अरून्धती ने देवीभिः- कौशल्या कैकेयी सुमित्रा रानीयों ने, शान्तया- श्रीराम की बहिन शान्ता ने, भूयः भूयः-बार-बार, सन्दिष्टम्- सन्देश दिया, यः कश्चित्- जो कोई भी, अस्याः- सीता की, गर्भदाहेदः- इच्छा, भवति- होती है, सः अश्वयम्- वह निश्चित ही, अचिरात्- अतिशीघ्र या बिना विलम्ब के, सम्पादयितव्य- पूर्ण की जानी चाहिए।

रामः- एषा- सीता, यत्- जो, कथयति- कहती है, तथा- वैसा ही, क्रियते- मेरा द्वारा सम्पादित की जाती है।

अष्टावक्रः- ननान्दुः- ननद या बहिन का, पत्या- स्वामी द्वारा, ऋष्टश्रृंगेण- ऋष्यश्रृंग के द्वारा, देव्याः-देवी सीता के प्रति, सान्दिष्टम्- संदेश कहा है वत्से- कल्याणि, कठोर गर्भा- पूर्णगर्भ वाली हो, अतः न आनीता- नहीं बुलाया गया। वत्सः- पुत्र, अपि रामचन्द्रः- राम चन्द्र भी, त्वद्विनोदार्थम्- तुम्हारे विनोद के लिए, एव स्थापितः- वहाँ पर स्थित रहे। तत्- उस कारण, पुत्र पूर्णोत्संगाम्- पुत्र से भरी गोद वाली, आयुष्मतीम्- सौभाग्यवती तुम को, द्रक्ष्यामः- देखेंगे।

रामः- (सहर्ष लज्जास्मितम्- हर्ष और लज्जा से साथ हंसते हुए) तथा- उसी प्रकार, अस्तु- होवे। भगवता- भगवान कुलगुरू, वशिष्ठेन- वशिष्ठ के द्वारा, न किञ्चित्- कुछ भी नहीं, कर्तुम्- करने के लिए, आदिष्टः- आदेश दिया।

व्याख्याः- सीता वीरपुत्र की जननी होगी ऐसे महर्षि वसिष्ठ के आशीर्वाद को सुनकर राम अपने आपको अनुगृहीत मानते हैं। वे तब महर्षियों की उत्कृष्टता का वर्णन करते हैं। लौकिक सामान्य जन अथवा साधु जो होता है वही सब वर्णन करते हैं अर्थात् प्रत्यक्षीकृत विषय का वर्णन किया जाता है, न कि किसी अप्रत्यक्ष का। किन्तु प्राचीन महर्षि विपरीत ही आचरण करते है। वे जो कहते है वह सब कुछ

ही आने वाले समय में होगा। इससे उनकी दूरदर्शिता ज्ञात होती है। अतः महर्षि वशिष्ठ ने सीता को वीर पुत्र का जन्म होगा, ऐसा कहा है तो वह अवश्य ही भविष्य में संभव होगा। यह श्रीराम का आशय है।

उसके बाद अष्टावक्र वसिष्ठ पत्नी अरुन्धती, राम की बहिन शान्ता और माताएँ कौशल्य कैकेयी व सुमित्रा सभी द्वारा प्रदत्त राम के प्रति सन्देश का वर्णन करता है। इस समय सीता गर्भवती है। अतः इस अवस्था में उसकी सर्वविध अभिलाषा अर्थात् इच्छाओं को राम द्वारा शीघ्र पालन किया जाना चाहिए। राम प्रसन्ता के साथ उनके आदेश को स्वीकार करते हैं।

महर्षि ऋष्यशृंग अष्टावक्र के मुख से यज्ञस्थल के प्रति सीता क्यों नहीं लाई गयी इसे सूचित करते हैं। वह कहता है कि सीता इस समय गर्भवती है। अतः इनके आगमन में कष्ट होगा, ऐसा विचार करके नहीं बुलवाई गयी। वत्स श्रीराचन्द्र भी सीता के मनोरंजन के लिए ही अयोध्या में रहे और ऋष्यशृंग पुत्र के साथ सौभाग्यवती सीता को देखने के लिए आयेंगे। ऐसा ऋष्यशृंग मुनि का आश्वासन है। राम वह सब कुछ सुनकर वसिष्ठ द्वारा उनके प्रति उपदेश दिया या नहीं, ऐसा पूछते हैं।

विशेष्ट टिप्पणी:- यहाँ लौकिकानाम श्लोक में ऋषिश्रेय का विस्तार रूप से कथावस्तु के बीजगुण का वर्णन होने से 'विलोभन' नामक सन्धि का अंग है। उसका लक्षण-''बीज गुणवर्णनं विलोभनम्''

व्याकरण विमर्शः-

लौकिकानाम्- लोके भवा लौकिकाः। अत्र लोकात् ठञ्प्रत्ययः। लौकिकशब्दस्य षष्ठीबहुवचने लौकिकानामिति रूपम्।

आद्यानाम्- आदौ भवाः आद्याः। आदिशब्दाद् यत्प्रत्यये आद्यशब्दो निष्पन्नः। तस्य षष्ठीबहुवचने आद्यानाम् इति रूपम्।

ऋषीणाम्- ऋष गताविति धातुः। ऋष्धातोः ''सर्वधातुभ्य इन्'' इति सूत्रेण इन्प्रत्यये, ''इगुपधात् कित्'' इति सूत्रेण किति च ऋषिशब्दो निष्पन्नः। तस्यैव षष्ठीबहुवचने ऋषीणामिति रूपम्।

सन्दिष्टम्- सम्-पूर्वकात् दिशधातोः क्तप्रत्यये नपुंसके सन्दिष्टम् इति रूपम्।

कठोरगर्भा-कठोरः गर्भः यस्याः सा कठोरगर्भा इति बहुव्रीहिसमासः।

पुत्रपूर्णोत्सङ्गा इति बहुव्रीहिसमासः, ताम्।

छन्दः- लौकिकानाम् इस श्लोक मे अनुष्टुप छन्द हैं।

अलंकार विमर्शः- लौकिकों व साधुओं की अपेक्षा आद्य ऋषियों के वचनों की अधिकता का कथन करने से व्यतिरेक अलंकार है -उसका लक्षण साहित्यदर्पण में -

''आधिक्यमुपयेयस्योपमाना न्यूनताऽयवा। व्यतिरेकः''

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 13.4

15. किन की वाणी का अर्थ अनुसरण करता है?
16. किनके अर्थ का वाणी अनुसरण करती है?
17. अरुन्धती राम की माताएँ और शान्ता ने राम के प्रति क्या आदेश दिया?
18. सीता कहा से यज्ञ के प्रति नहीं आयी?
19. राम क्यों अयोध्या में रहें?
20. ऋष्यशृंग सीता को कैसा देखना चाहते है?

13.6 मूलपाठ

अष्टावक्र : - श्रूयताम्।

जामातृयज्ञेन वयं निरुद्धा स्त्वं बाल एवासि नवं च राज्यम्।
युक्तः प्रजानामनुरञ्जने स्यास्तस्माद्यशो यत्परमं धनं वः॥11॥

रामः- यथा समादिशति भगवान्मैत्रावरुणिः।

स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा ॥12॥

सीता- **अदो जेव्व राहवधुरन्धरो अज्जउत्तो। (अत एव राघवधुरन्धर आर्यपुत्रः।)**

रामः- **कः कोऽत्र भोः। विश्राम्यतामष्टावक्र।**

अष्टावक्रः - **(उत्थाय परिक्रम्य च) अये कुमारलक्ष्मणः प्राप्तः।**

(इति निष्क्रान्तः)

अन्वयः-

अष्टावक्रः- श्रूयताम्। वयं जामातृयज्ञेन निरुद्धाः त्वं बाल एव असि च राज्यं नवम् (अत एव) प्रजानाम् अनुरञ्जते युद्धः स्याः तस्मात् यशः वः परमं धनम् (अस्ति)॥11॥

रामः- भगवान् मैत्रावरुणिः यथा समादिशति।
लोकस्य आराधनाय स्नेहं दयां सौख्यं च यदि वा जानकीम् अपि मुञ्चतो मे व्यथा न अस्ति॥12॥

सीता- अत एव आर्यपुत्रः राघवधुरन्धरः।

रामः- कः कः अत्र भोः। अष्टावक्रः विश्राम्यताम्।

अष्टावक्रः- (उत्थाय परिक्रम्य च) अये कुमारलक्ष्मणः प्राप्तः।

(इति निष्क्रान्तः)

अन्वयार्थ-

अष्टावक्रः- श्रूयताम् - सुनो। वयम्- हम सब को वसिष्ठादि, जामातृ यज्ञेन- ऋष्यश्रृंग के बारहवर्षीय यज्ञ ने, निरूद्धाः- रोका था। त्वं- तुम, राम, बालः- कुमारः, राज्यशासन में अप्रौढ हो। राज्य नवम्- राज्य नवीन है। अतः प्रजानाम्- लोगो का, अनुरंजने- अनुराग उत्पादन में, युक्तः स्याः- तत्पर होंवे। तस्मात्- अनुराग उत्पादन के कारण से, यषः- कीर्ति होगी, यद्-जो, यशः- यश, वः- हमारा, सर्वोत्कृष्टं धनम्- सर्वोत्कृष्टं सम्पत्ति होगी।

रामः- भगवान्- षडैश्वर्यसम्पन्न, मैत्रावरुणिः- महर्षि वशिष्ठ, यथा समादिशति- जैसे आज्ञा देते है, तथैव करिष्यामि- वैसे ही करूंगा। लोकस्य- लोगों के, आराधनाय- अराधना के लिए, स्नेहम्- अनुराग को, दयाम्- करूणा को, सौख्यम्- सुख को, च- और, यदि वा- अथवा, जानकीम् अपि-सीता को भी, मुंचतः- त्यागा तो, मे- मेरी, व्यधा- दुःख, न अस्ति- नहीं होता।

सीताः- अतएव -इस कारण से, आर्यपु=ः- मेरे स्वामी, राधवधुरन्धारः- रघुकुल शिरोमणि है।

रामः- कः कः अत्रभो-यहाँ कौन है। अष्टावक्रः विश्राभ्यतां- अष्टावक्र के विश्राम प्रबंधन का सम्पादन करो।

अष्टावक्रः- (उत्थाय परिक्रम्य च- उठकर और परिक्रमा करके)। अये- अरे, कुमार लक्ष्मणः **प्राप्तः**- कुमार लक्ष्मण आ गया।

(एव मुक्त्वा निर्गतः-ऐसा कहकर निकल गया)

व्याख्याः- यहाँ वसिष्ठ राम के लिए राज्य शासन विषयक उपदेश देते हैं। ऋष्यश्रृंग के यज्ञ को उपलक्ष्य करके राज्य के सभी प्रौढ़ जन और स्वयं कुलगुरू वशिष्ठ वहाँ उपस्थित थे। अतः यज्ञ से उनके आने में विलम्ब होगा और अभी राज्याभिषेक हुआ है। अतः राज्य शासन के विषय में वह राम अभी अनभिज्ञ है। रघुवंशीय राजाओं को यश ही परम अभीष्ट हैं। अतः कीर्ति प्राप्त करने के लिए निरन्तर प्रजाजनों के मन को प्रसन्न करने में तत्पर रहना चाहिए। प्रजा राजा में सन्तुष्ट हो, इस विषय में ध्यान देना चाहिए। इसी से राम यथार्थ प्रजापालक राजा हो सकते हैं, यह वशिष्ठ का अभिप्राय है। भविष्यकाल में प्रजा में अनुराग उत्पन्न करने के लिए राम के द्वारा सीता का परित्याग किया जायेगा। इस घटना का निर्देश भी यहाँ प्राप्त होता है।

राम ने, वशिष्ठ द्वारा दिये गये आदेशों की, पालना करने की प्रतिज्ञा की। प्रजापालन के लिए

टिप्पणी

वह सब कुछ करने में समर्थ है। उसके लिए वह स्नेह, दया, मित्र सब कुछ परित्याग करने के लिए प्रस्तुत है और भी प्रजा क आराधना के लिए यदि धर्मपत्नी जानकी सीता का भी त्याग करना हो तो भी किंचित दु:ख नहीं होगा। इस प्रकार श्रीराम की प्रजावात्सल्य और गुरुवचन में श्रद्धा भी प्रकाशित होती है और भविष्यकाल में प्रजा के लिए सीता का परित्याग परिलक्षित होता है।

प्रजापालन के विषय में राम की प्रतिज्ञा को सुनकर सीता अपने पति राम की प्रशंसा करती हुए कहती है कि इस कारण ही श्रीराम रघुकुल श्रेष्ठ है। उसके बाद राम ने अष्टावक्र की विश्राम व्यवस्था करने का आदेश दिया। तदनन्तर भगवान् अष्टावक्र विश्राम के लिए उठकर वहाँ परिक्रमा करते हैं। उसी समय वहां लक्ष्मण उपस्थित होते हैं। उसको देखकर अष्टावक्र कुमार लक्ष्मण आ गये ऐसा कहकर चले गये।

विशेष टिप्पणी:- यहाँ जामातृयज्ञेन इस श्लोक में प्रजा के अनुरंजन से प्राप्त यश परम धन है इसके लिए सीतानिर्वासन रूप 'बीजमुक्त' नामक संधि अंग है -जिसका लक्षण-'

'अल्पमात्रं समुद्दिष्टं बहुधा यद्विसर्पति।
फलस्य प्रथमों हतु बीजं तदाभिधीयते॥''

व्याकरण विमर्शः-

- **जामातृयज्ञेन**-जामातुः यज्ञः जामातृयज्ञः इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः, तेन जामातृयज्ञेन।
- **अनुरञ्जने**- अनुपूर्वकात् रञ्ज्धातोः ल्युटि सप्तम्येकवचने अनुरञ्जने इति रूपम्।
- **सौख्याम्**-सुखस्य भावः इत्यर्थे ष्यञ्प्रत्यये सौख्यम् इति रूपम्।
- **मुंचतः**- मुच्-धातोः शतरि षष्ठयेकवचने मुंचतः इति रूपम्।
- **मैत्रावरुणिः**- मित्रश्च वरुणश्च मित्रावरुणौ इति इतरेतरद्वन्द्वसमासः। मित्रावरुणयोः अपत्यं पुमान् इति विग्रहे ''बाह्वादिभ्यश्च'' इति इञ्प्रत्यये मैत्रावरुणिः इति रूपम्।

(1) **जामातृयज्ञेन**-श्लोक में इन्द्रवज्रा छन्द है, जिसका लक्षण है-
स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः।

(2) **स्नेहामिति**-श्लोक में अनुष्टुप छन्द है।

पाठगत प्रश्न 13.5

21. वसिष्ठादि किस कारण से रूके हुए है?
22. रघुवंशीयों का परम धन क्या है?
23. 'जामातृ यज्ञेन' इस श्लोक में कौनसा छन्द है, लक्षण लिखिए?
24. 'मैत्रावरूणि' रूप सिद्ध कीजिए?

टिप्पणी

25. लोक की आराधना के लिए राम क्या-क्या त्यागने को प्रस्तुत हैं?

26. राजा का प्रधान धर्म क्या है?

13.7 मूलपाठ

(प्रविश्य)

लक्ष्मणः- जयति जयत्यार्यः। आर्य! अर्जुनेन चित्रकरेणास्मदुपदिष्टमार्यस्य चरितमस्यां वीथ्यामभिलिखतम्। तत्पश्यत्वार्यः।

रामः- जानासि वत्स! दुर्मनायमानां देवीं विनोदयितुम्। तत्कियन्तमवधिं यावत्।

लक्ष्मणः- यावदार्याया हुताशनशुद्धिः।

रामः- **शान्तं पापम् (ससान्त्ववचनम्।)**
उत्पत्तिपरिपूतायाः किमस्याः पावनान्तरैः।
तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः॥13॥
देवि देवयजनसम्भवे! प्रसीद। एष ते जीवितावधिः प्रवादः।
क्लिष्टो जनः किल जनैरनुरञ्जनीयस्तन्नो यदुक्तमशुभं च न तत्क्षमं ते।
नैसर्गिकी सुरभिणः कुसुमस्य सिद्धा मूर्ध्नि स्थितिर्न चरणैरवताडनानि॥14॥

अन्वयः- (प्रविश्य)

लक्ष्मणः- आर्यः जयति जयति। आर्य! अर्जुनेन चित्रकरेण अस्मदुपदिष्टम् आर्यस्य चरितम् अस्यां वीथ्याम् अभिलिखितम्। तत् आर्यः पश्चतु।

रामः- वत्स! दुर्मनायमानां देवीं विनोदयितुं जानासि। तत् कियन्तम् अवधिं यावत्।

लक्ष्मणः- आर्याया हुताशनशुद्धिः यावत्।

रामः- शान्तं पापम् (ससान्त्ववचनम्।) उत्पत्तिपरिपूतायाः अस्याः पावनान्तरैः किम्। तीर्थोदकं च वह्निश्च अन्यतः न शुद्धिम् अर्हतः॥13॥

देवयजनसम्भवे देवि, प्रसीद। एष प्रवादः ते जीवितावधिः।

क्लिष्टः जनः जनैः अनुरञ्जनीयः किल, तत् ते नः यद् अशुभम् उक्तं तत् न क्षमम्। सुरभिणः कुसुमस्य मूर्ध्नि स्थितिः नैसर्गिकी सिद्धा, चरणैः अवताडनानि न ॥14॥

अन्वयार्थः- (प्रविश्य- प्रवेश करके)

लक्ष्मणः- आर्यः जयति जयति- महाराज आप की सदा विजय हो। आर्य- महाराज!

टिप्पणी

अर्जुनेनचि=करेण- अर्जुन नामक चित्रकार द्वारा, अस्मदृपदिष्टम्- हमारे द्वारा उपवर्णित को, आर्यस्य श्रीरामस्य- आर्यश्रीराम के, चरितम्- चरित्र को, अस्याम् वीश्याम्- इस चित्रमयीश्रेणी को, अभिलिखितम्- अंकित किया है। तत्- उस चित्र को, आर्य- श्रीराम, पश्यन्तु- देखें।

रामः- वत्स- प्रिय लक्ष्मण। दुर्मनायमानाम् देवीम्- दुःखित मानसवाली सीता को, विनोदयितुम्- सन्तुष्ट करने के लिए, जानसि- समर्थ हो। तत्- वह चित्रवीथि, कियन्तम् अवधिम् यावत्- कितनी अवधि तक का है अर्थात् इसमें कहां तक के चरित्र का वर्णन है।

लक्ष्मणः- आर्यायाः- सीता की, हुताशन शुद्धिः- अग्निशुद्धि या अग्नि परीक्षा तक की कथा है।

रामः- शान्तम् पापम्- आपके द्वारा पुनः ऐसा नहीं कहना चाहिए। (ससान्त्वचनम्- अत्यन्त मधुर वचन के साथ) उत्पत्ति परिपूतायाः- जन्म से ही अयोनिज होने के कारण पवित्र, अस्याः- इस देवी सीता का, पावनान्तरैः -अग्नि आदि पवित्रता के साधनों से, किम्-क्या प्रयोजनम्-प्रयोजन है। तीर्थोदकम्- तीर्थ का जल गंगा जल, वह्निश्च- और अग्नि, अन्यतः- अन्यसाधन से, शुद्धिम्- पवित्रता के, न अर्हतः- सम्पादन करने के योग्य नहीं हैं। देवयजन सम्भवते- देव यज्ञ से उत्पन्न, देवि- भगवती, सीता, प्रसीद- प्रसन्न होंवे। एषः-यह, ते- तुम्हारे, जीवितावधिः- आजीवन, प्रवादः- लोकापवाद है।

क्लिष्टः- दुःखित, जनः- लोग, जनैः- अन्यलोगों के द्वारा, अनुरंजनीयः- आराधना करनी चाहिए, किल- निश्चय से। तत्- उस कारण से, ते- तुम्हारे, नः- हमारे, विषये- विषय में, **यत्**- जो, अशुभम्- अमंगल, तत् कथनम्- वह कथन, न क्षमम्- उचित नहीं है। सुरभिणः- सुगन्धित, कुसुमस्य- पुष्प को, मूर्ध्निः- मस्तक पर, स्थितिः- स्थित होंवे। नैसर्गिकी- स्वाभाविक, सिद्धा- लोक में प्रसिद्ध है परन्तु, चरणैः- पैरों में, अवताडनानि- पैरों से कुचलना या प्रहार करना, न नैसर्गिकाणि- वह स्वाभाविक सिद्ध नहीं है।

व्याख्याः- लक्ष्मण आकर राम की विजयप्रशस्ति कह कर उनसे निवेदन करते हैं कि जैसा आदेश था वैसा राम के जीवन के वृतान्त का चित्रांकन अर्जुन नामक चित्रकार के द्वारा सम्पन्न किया गया। अतः आप राम इस चित्र को देखें, ऐसा लक्ष्मण राम से प्रार्थना करते हैं। उसके बाद राम लक्ष्मण को कहते हैं कि सीता पिता के विरह में खिन्नचित है इसलिए दुखित उस सीता के विनोद करने में तुम समर्थ हो। उसके बाद वे लक्ष्मण से पूछते हैं कि इस चित्र में कहाँ तक चित्र वर्णित है। तब लक्ष्मण उत्तर देते हैं कि देवी सीता की अग्नि परीक्षा तक के चित्र इसमें व्याप्त हैं। लक्ष्मण के वचन को सुनकर अप्रसन्न राम सुमधुर भाषा में बोलते हैं कि इस प्रकार के वाक्य नहीं कहना चाहिए।

आजन्म शुद्ध सीता की शुद्धता की परीक्षा के लिए अन्य किसी द्रव्य का कोई प्रयोजन नहीं है। जैसे तीर्थ के जल और अग्नि दोनों या अन्य द्रव्यों से शुद्धिकरण का प्रयोजन नहीं होता है। उन

टिप्पणी

दोनों से शुरू होने का कारण वैसे ही आजन्मशुद्ध सीता को अग्नि से शुद्धि की अपेक्षा नहीं है। स्वत: शुद्ध होने के कारण अन्य से शुद्धि सम्पादन की आवश्यकता नहीं है।

उसके बाद सीता के प्रति राम कहते हैं कि आप प्रसन्न हो, यह लोकापवाद उसके आजीवन ही है। उसके बाद राम कहते हैं कि ये लोग अपने रघुकुल की रक्षा करते हैं। उनसे दु:खित जन तिरस्कार करने योग्य नहीं है अपितु अवश्य अनुरंजन योग्य है। अत: दु:खत सीता के लिए जो अशुभ वाक्य प्रयुक्त हुए, उन्हें प्रयुक्त नहीं किया जाना चाहिए।

प्रसंग को स्पष्ट करने के लिए दृष्टान्त देते हैं। सुगन्धित पुष्पों को पैरों से मर्दन नहीं करना चाहिए। क्योंकि उनको मस्तक पर धारण करना स्वभाविक होता है।

व्याकरण विमर्श:-

दुर्मनायमानाम्-दु:स्थितं मन: यस्या: सा दुर्मना: इति बहुव्रीहिसमास:। अदुर्मना: दुर्मना: भवति इत्यर्थे क्यङ्प्रत्यये निष्पन्नाद् दुर्मनायधातो: शानच्प्रत्यये टापि दुर्मनायमाना इति भवति। तत: द्वितीयैकवचने दुर्मनायमानाम् इति रूपम्।

उत्पत्तिपरिपूताया:- उत्पत्त्या परिपूता उत्पत्तिपरिपूता इति तृतीयातत्पुरुषसमास:, तस्या: उत्पत्तिपरिपूताया:।

पावनान्तरै:- पावयन्ति इति पावनानि। अन्यानि पावनानि पावनान्तराणि तै: इति पावनान्तरै: इति मयूरव्यंसकादिवत्समास:।

तीर्थोदकम्-तीर्थस्य उदकं तीर्थोदकम् इति षष्ठीतत्पुरुषसमास:।

अनुरंजनीय:- अनुपूर्वकात् रञ्ज्धातो: णिच्प्रत्यये अनीयर्प्रत्यये च अनुरंजनीय इति रूपम्।

नैसर्गिकी- निसर्गाद् आगता इत्यर्थे निसर्गशब्दात् ठकि डीपि नैसर्गिकीशब्दो निष्पद्यते।

स्थिति:- स्थाधातो: क्तिन्प्रत्यये स्थितिशब्दो निष्पद्यते।

छन्द:- (1) उत्पत्ति परिपूताया: - श्लोक में अनुष्टुप छन्द है।

(2) **क्लिष्टा जन:** - श्लोक में वसन्ततिलका छन्द है।

अलंकार विमर्श:-

(1) **उत्पत्तिपरिपूताया:**- इस श्लोक में तीर्थोदकम् एवं आग्नि के दृष्टान्त से सीता की पवित्रता समर्थन होने के कारण दृष्टान्त अलंकार है। उसका लक्षण है- **''दृष्टान्तस्तु सधर्मस्य वस्तुन: प्रतिबिम्बनम्''**

(2) **क्लिष्टो जन:**- में भी दृष्टान्त अलंकार है।

पाठगत प्रश्न 13.6

टिप्पणी

27. चित्रकार का क्या नाम है?

28. रामचरित का चित्रांकन कहाँ तक है?

29. क्या-क्या स्वतः पवित्र होता है?

30. सीता का किससे प्रयोजन नहीं है?

31. दुःखित जन के प्रति क्या कर्तव्य है?

32. कुसुम की क्या स्वाभाविकता है?

पाठसार

भूमिसुता वैदेही रामपत्नी सीता बैठी थीं। राम सीता को सान्त्वना देने के लिए प्रवेश करते हैं। उसी समय ऋष्यश्रृंग मुनि के आश्रम से वसिष्ठादि के संवाद को स्वीकार करके भगवान् अष्टावक्र आये। वह वसिष्ठादि के संदेश को सुनाते हुए कहते हैं कि महर्षि वसिष्ठादि ने सीता के लिए आशीर्वाद प्रदान किया- वह वीर प्रसवा हो। वसिष्ठ पत्नी अरुन्धती, राम की माताएँ कौशल्या कैकेयी सुमित्रा और बहन शान्ता ने राम के प्रति कहा- कि सीता गर्भवती है। अतः इस समय राम के द्वारा उसकी सभी अभिलाषाओं को शीघ्र पूरी की जाये। महर्षि ऋष्यश्रृंग ने कहा कि पूर्णगर्भ होने के कारण सीता यज्ञ स्थल पर आने में असमर्थ है। अतः वे उसको सपुत्र देखने के लिए अयोध्या में आयेंगे। कुलगुरु वसिष्ठ ने राम को आदेश दिया कि प्रजा जैसे सुखी हो वैसे ही राज्य का पालन करना चाहिए, क्योंकि उससे ही रघुवंशियों को अभीष्ट यश की प्राप्ति होती है। आदेश को सुनकर राम कहते हैं कि प्रजा के सुख के लिए वह स्नेही, दया, मित्र और धर्मपत्नी सीता का भी परित्याग करने के लिए तैयार है। इस प्रकार श्रीराम वचन से भविष्यकाल में सीता को परित्याग करेंगे यह सूचित होता है। इसके बाद कुमार लक्ष्मण प्रवेश करते हैं, महर्षि अष्टावक्र विश्राम करने जाते हैं। लक्ष्मण कहते हैं कि जैसा आदेश दिया था वैसा ही रामचरितात्मक चित्रपट को अंकित करके चित्रकार अर्जुन आया है। उसके बाद राम लक्ष्मण से पूछते हैं कि इस चित्रपट में कहां तक का चित्रण किया गया है। तब लक्ष्मण कहते हैं कि सीता की अग्नि शुद्धि पर्यन्त तक का चित्रण है। उसके बाद राम सीता की आजन्म शुद्धता का वर्णन करते हैं। जैसे तीर्थ का जल और अग्नि स्वतः पवित्र है उसी प्रकार सीता भी स्वतः पवित्र है। अतः राम सीता को कहते हैं, दुःखी मत हो। जो दुःखी व्यक्ति होता है, उसके दुःख को दूर करना उचित है। अतः सीता के प्रति लक्ष्मण का वचन उचित नहीं है। क्योंकि पुष्प की स्वभाविक अवस्था सिर पर होती है न कि पैरो में। इस प्रकार पाठ समाप्त होता है।

आपने क्या सीखा

- राम के गुणों को जाना।
- सीता के चरित्र को जाना।
- छन्द एवं उनके लक्षणों को जाना।

पाठन्त प्रश्न 13.6

(1) किन्त्वनुष्ठाननित्यत्वम् - इस श्लोक की व्याख्या कीजिए।

(2) गुरुजन द्वारा राम के प्रति उपदेश को लिखिए।

(3) विश्वम्भरा - श्लोक की व्याख्या कीजिए।

(4) लौकिकानाम् साधुनाम्- श्लोक की व्याख्या करो तथा ऋषियों के भेद बताओ।

(5) सीता की आजन्मपवित्रता के विषय में श्रीराम ने क्या कहा।

(6) जामातृयज्ञेन-इस श्लोक की व्याख्या कीजिए।

(7) स्नेहं दयां च सौख्यम् इस श्लोक की व्याख्या कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

13.1

(1) अनुष्ठान नित्यता के कारण गृहस्थों की स्वतंत्रता नियन्त्रित होती है।

(2) किन्तु +अनुष्ठाननित्यत्वम्।

(3) कर्म तीन प्रकार के होते हैं- नित्य, नैमित्तिक और काम्य

(4) आहिताग्नियों की गृहस्थता विपरीत ही संकटकारी होती है।

(5) बन्धुजन वियोग सन्तापकारी होता है।

(6) संसार भाव हृदयमर्म का छेदक होता है।

(7) हृदयमर्म के छेदन से, संसार भाव से विरक्त मनीषी सभी कामों को त्याग करके अरण्य में विश्राम करते हैं।

13.2

(8) पिता के परिजन का रामभद्र व्यवहार करना शोभित है।

टिप्पणी

(9) ऋष्यशृंग मुनि के आश्रम से अष्टावक्र आये।

(10) कंचुकी राम को रामभद्र सम्बोधन करता है।

13.3

(11) सीता की माता विश्वभरा पृथ्वी हैं।

(12) सीता के पिता प्रजापति के समान जनक थे।

(13) जिस वंश में सूर्य वंश प्रवर्तक और वशिष्ठादि आचार्य हैं, उसके वंश की सीता कुलवधु है।

(14) सीता के प्रति वशिष्ठ का 'वीर प्रसवा: भूया:' यह आशीर्वाद है।

13.4

(15) प्राचीन ऋषियों की वाणी अर्थ का अनुसरण करती है।

(16) लौकिक साधुओं के अर्थ का वाणी अनुसरण करती है।

(17) अरुन्धती, राम की माताओं और बहन शांता का राम के प्रति आदेश यह है कि इस समय सीता पूर्ण गर्भ है अत: उसकी सभी इच्छाएँ शीघ्र पूर्ण करनी चाहिए।

(18) सीता गर्भवती है अत: यज्ञ में नहीं आयी।

(19) राम सीता के मनोविनोद के लिए अयोध्या में रहे।

(20) ऋष्यशृंग सीता की गोद पुत्र सहित देखना चाहते हैं।

13.5

(21) वसिष्ठादि जामाता ऋष्यशृंग के यज्ञ के कारण रूके हुए हैं।

(22) रघुवंशीय राजाओं को प्रजा में अनुरंजन के कारण प्राप्त यश परम धर्म है।

(23) जामातृयज्ञेन श्लोक में इन्द्रवज्रा छन्द है, उसका लक्षण -

''स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ ग:''

(24) मित्रश्च अरूणश्च मित्रावरुणौ इतरेतरद्वन्द्व समास तया: अपत्यम् पुमान् इस विग्रह में ''बाह्मदिभ्यश्चं'' से इञ्प्रत्यय होकर मैत्रावरुणि: रुप बना।

(25) लोक की आराधना के लिए राम स्नेह, दया मित्र और जानकी सीता को भी त्यागने को तत्पर है।

(26) राजा का प्रधान धर्म प्रजा की आराधना है।

टिप्पणी

13.6

(27) चित्रकार का नाम अर्जुन था।

(28) रामचरित में सीता की अग्निशुद्धि तक वीथि में अंकित है।

(29) तीर्थ का जल और अग्नि स्वतः पवित्र है।

(30) सीता की पवित्र के लिए अन्य प्रयोजन नहीं है।

(31) दुःखीजन संबंधियों द्वारा दुःख को दूर करके प्रसन्न करने योग्य होते है।

(32) पुष्प की स्वाभाविक स्थिति सिर पर होती है।